Page No.
Date : / /

प्र०५) प्रतीत्यसमुत्पाद की व्याख्या करें?

उ०) प्रतीत्यसमुत्पाद द्वादश निदान अर्थात द्वितीय आर्यसत्य का निरूपण है। वस्तुतः द्वितीय आर्यसत्य कारणकार्य के सम्बन्ध की अभिव्यक्ति करता है। प्रतीत्यसमुत्पाद उसी सम्बन्ध का विस्तार है। दूसरे शब्दों में कारणकार्य सिद्धान्त का बौद्ध नाम प्रतीत्यसमुत्पाद है। प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है कि एक की उत्पत्ति के साथ दूसरे की उत्पत्ति। कारण के उत्पन्न होने पर कार्य की उत्पत्ति होती है। संसार की सभी वस्तुएं एक-दूसरे से कारणकार्य शृंखला के रूप में ही सम्बद्ध हैं।

प्र०) चार आर्यसत्यों की संक्षिप्त व्याख्या करें।

उ०(i) प्रथम आर्यसत्य

मानव जीवन में दुःख अवश्यम्भावी है। बुद्ध के अनुसार दुःख है राग, विराग, प्रेम द्वेष, ईर्ष्या, वियोग, लोभ, तृष्णा आदि। दीघनिकाय में दुःख को इन शब्दों में परिभाषित किया गया है - जन्म लेना, बूढ़ा होना, मरना शोक करना, रोना पीटना पीड़ित होना, चिन्ता करना, परेशान होना, इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होना दुःख है वास्तव में हमारे जीवन का प्रत्येक अंश ही दुःखमय है।

Date: / /

(ii) द्वितीय आर्यसत्य

दुःख एक घटना या कार्य है, प्रत्येक घटना या कार्य के पीछे कोई-न कोई कारण अवश्य होता है। इसलिए दुःख का भी अवश्य कोई कारण है। बुद्ध ने भी दुःख के बाद कारणों की खोज की जिसका उल्लेख द्वितीय आर्यसत्य में हुआ है। अतः द्वितीय आर्यसत्य को नैतिक कारणतावाद की संज्ञा दी जा सकती है। इसे द्वादश निदान भी कहा जाता है। दुःख का मूल कारण अविद्या (अज्ञान) है। अविद्या के दूर होते ही दुःख का अंत हो जाता है।

(iii) तृतीय आर्यसत्य

बुद्ध ने कहा कि हमें दुःखी रहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यदि हम दुःख के कारण को ही नष्ट कर दें तो उसका परिणाम उत्पन्न नहीं होगा। यदि हम यथार्थ के बोध से अपने भ्रम को समाप्त कर दें तो दुःख फिर कभी नहीं लौटेगा। बुद्ध हमारी किन्हीं एक-दो समस्या की बात नहीं कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम नई समस्याओं की उत्पत्ति को ही पूरी तरह से समाप्त कर सकेंगे।

(iv) चतुर्थ आर्यसत्य

बौद्ध दर्शन का तृतीय आर्यसत्य अर्थात् निर्वाण एक वस्तु आभूषण है। इस आभूषण की प्राप्ति के उपाय जिस आर्यसत्य के अंतर्गत बतलाया गया है, उसे चतुर्थ आर्यसत्य कहते हैं